तत्परं परमज्योतिः काशीति प्रथितं श्रुतौ ।
तस्मात्काशीब्रह्मरूपाऽजड़ा पृथ्व्या न सङ्गता ॥
(ब्रह्मवैवर्त पुराण)

**अर्थः-** वेद में परम ज्योति परात्पर काशी प्रख्यात है। अतः काशी ब्रह्मरूपिणी है, अजड़ है; इसका भूतल से सम्बन्ध नहीं है।

यल्लिङ्गं दृष्टवन्तौ हि नारायणपितामहौ ।
तदेव लोके वेदे च काशीति परिगीयते ॥
(पद्मपुराणान्तर्गत काशी माहात्म्य)

**अर्थः-** नारायण एवं ब्रह्मा जी ने जिस तत्व को देखा है, वही लोक और वेद में काशी कहा गया है।

तदेव काशिकेत्येतत्प्रोच्यते क्षेत्रमुत्तमम् ।
परंनिर्वाणसंख्यानं सर्वोपरि विराजितम् ॥
अस्यानन्दवनं नाम पुराकारि पिनाकिना ।
क्षेत्रस्यानन्दहेतुत्वाद्‌विमुक्तमनन्तरम् ॥ ३१॥
(रुद्रसंहितायां खण्ड १ अ० ६)

इस काशी क्षेत्र को अन्य सभी क्षेत्रों से अति-उत्तम कहा है तथा परं निर्वाण (सद्योमुक्ति) प्रदान करने वाला है। भगवान् शङ्कर ने इसको पूर्व में आनन्दवन नाम से अभिहित किया है क्योंकि यह क्षेत्र आनन्द का हेतु है और शीघ्र ही मुक्ति को प्रदान करने वाला है।

काशीविश्वेश्वयोर्भक्त्या तन्नामजपकारकाः ।
निर्लिप्ताः कर्मभिर्नित्यं कैवल्यपदभागिनः ॥ ३२॥
(शतरुद्रसंहितायां) अ० ४२

जो प्राणी काशी नगरी तथा भगवान् विश्वनाथ की भक्ति के सहित भूतभावन शिव का ~~नाम~~ जप करता है एवं कर्मों से निर्लिप्त होकर काशी वास करता है वह अवश्य ही कैवल्य

वाराणसीति काशीति रुद्रावास इति स्फुटम् ।
मुखान्निर्गतं येषां तेषां न प्रभवेद्यम: ॥ ५।५५।३६
काशीख. (स्क. पु.)

**अर्थ:-** वाराणसी, काशी, रुद्रावास इस प्रकार जिनके मुख से स्पष्ट रूप से उच्चारण होता है तो उनके ऊपर यम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

मोक्षार्थिनां मोक्षदनाम धेयाधर्मार्थिनां धर्मद विल्लनाद्या।
अर्थार्थिनामर्थद पादपद्माकामार्थिनां कामदकल्पवल्ली ॥
(शिवरहस्य)

**अर्थ:-** विष्णु भगवान् शिवजी से कहते हैं कि आप मोक्षार्थियों के लिये मोक्ष प्रद हैं, धर्मार्थियों के लिये धर्मद हैं। अर्थार्थियों के लिये अर्थद हैं और कामार्थियों के लिये कामद ~~कल्पवल्ली~~ हैं।

काश्यां प्रदीप प्रभया प्रकाशित:,
पापान्धकार: खलु नाशमेति ।
विश्वेश्वरोद्भवया सुविद्यया,
महात्मनां पुण्यकृतां कृतात्मना ॥
(काशी रहस्य १-१६१)

**अर्थ:-**



काश्यां पापं ये प्रकुर्वन्ति नित्यं नानाशास्त्रैर्वेदसङ्घैर्निषिद्धम्।
तेऽपि ब्रह्म प्राप्नुवन्त्येव शीघ्रं ज्ञात्वा देवा विश्वनाथन्त मूचुः ॥२८॥

**(काशी रहस्य अ० १७)**

**अर्थः-** अनेक प्रकार के वेद शास्त्र से निषिद्ध पापों को जो काशी में करते हैं, वे भी यदि काशी में मरते हैं तो वे परब्रह्म परमात्मा ईश्वर को प्राप्त करते हैं उसको देवता लोग विश्वनाथ ही कहते हैं।

काश्यां यथा पापकृताम्महाभयं काश्यां तथा पुण्यकृताम्महत्सुखम्।
अतः सुखार्थम्प्रयतेत धर्मतो जीवज्जनो याति मृतः परम्पदम् ॥६५॥

**(काशी रहस्य अ० १६)**

**अर्थः-** काशी में जैसे पाप करने वालों को महाभय प्राप्त होता है, वैसे ही पुण्य करने वालों को महासुख प्राप्त होता है। इसलिये धर्म पूर्वक जीवन यापन करते हुये सुख स्वरूप परमात्मा की प्राप्ति के लिये पुण्य करने वाला व्यक्ति परम पद मोक्ष को प्राप्त ~~होता है~~। करता है।

नारायण परः काश्यां महादेवपरोऽथवा।
भूत्वा सदाचारपरस्तिष्ठेत्काश्यां न चान्यथा ॥७८॥

**(काशी रहस्य अ० १८)**

**अर्थः-** भगवान् नारायण का अथवा देवाधिदेव महादेव का भक्त होकर सदाचार करते हुये काशी में निवास करना चाहिये, अन्यथा नहीं।

... भगवान्, जो परमात्मा महेश्वर कहे जाते हैं, उसे तथा समस्त प्राणियों के माहात्म्य और घोर रूप का आश्रयण कर जो देव एवं दानवों के लिये भी दुष्कर है, वे स्थाणुभूत महेश्वर प्रलय पर्यन्त यहाँ निवास करते हैं।

कलौ न काशीवसतिः स्थिरा भवेत्,
पापात्मनां दण्डपाणिप्रभावात् ॥६॥
**(काशी रहस्य अ०१८)**

**अर्थः-**

✓ निस्तीर्णास्ते सर्वधर्मैः कृतार्थाः काशीम्प्राप्य स्वानुभूतिं लभन्ते।
कुर्वन्नित्यं पुण्यसारं समन्ताद्भूयः काश्याम्पापकृद्दुःखभाक्स्यात् ॥८॥
**(काशी रहस्य अ०१८)**

**अर्थः-** काशी को प्राप्त करके कृतार्थ होकर वे लोग विधि निषेध से परे हो स्वानुभूति को प्राप्त करते हैं, जो नित्य काशी में पुण्य करते हैं। ~~और~~ पाप को करने वाला दुःख को प्राप्त करते हैं।

✓ ब्रूहि गुह्यं यथातत्त्वं यत्र नित्यं भवः स्थितः।
माहात्म्यं सर्वभूतानां परमात्मा महेश्वरः ॥३॥
घोररूपंसमास्थाय दुष्करं देवदानवैः।
आभूतसम्प्लवं यावत् स्थाणुभूतो महेश्वरः ॥४॥
✓ (काशी में) **(मत्स्य पुराण अ०१८१)**

**अर्थः-** जहाँ नित्य हि भगवान् विश्वनाथ जी विराजमान हैं, जो परमात्मा महेश्वर कहे जाते हैं, उसे तथा समस्त प्राणियों के माहात्म्य और घोर रूप का आश्रयण कर जो देव एवं दानवों के लिये भी दुष्कर है, वे स्थाणुभूत महेश्वर प्रलय पर्यन्त यहाँ निवास करते हैं।



शिवभक्तः काशिवासी ह्यर्जुनेन समोऽपि हि ॥८१½॥
यस्य स्वरूपं सर्वात्मा काश्यामुपदिशत्यलम् ॥८२½॥
(काशी रहस्य अ० १८)

अर्थः-

धर्मी धार्मिकाणान्धनैः पुत्रैः कलत्रैः किम्प्रयोजनम् ।
धर्मसङ्ग्रहशीलाश्च यतस्ते काशिसंश्रयाः ॥३८॥
**(काशी रहस्य अ० ८)**

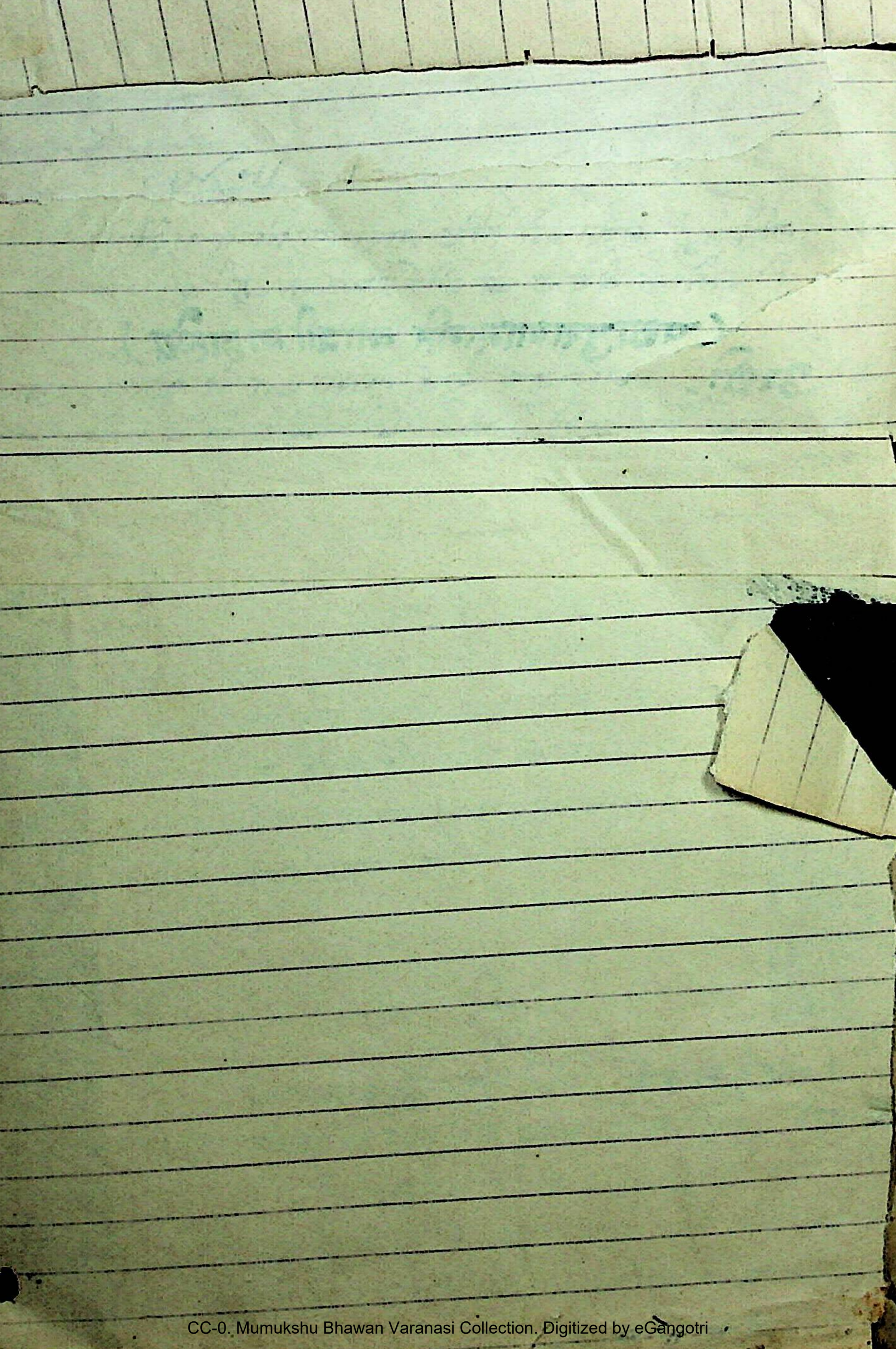
**अर्थः-** जो काशी में रहकर धर्म संग्रह में लगे धार्मिक लोग हैं, उनको धन, पुत्र, स्त्री आदि की क्या आवश्यकता है, क्योंकि धर्म ही सबका मूल है।

न देहो भोक्ता तत्र दृष्टं शास्त्रे पुरातने ।
मोक्षो ह्यसंशयस्तत्र पञ्चत्वं तु गतस्य वै ॥३४॥
**(मत्स्य पुराण अ० १८४)**

**अर्थः-** प्राचीन शास्त्रों में निर्णय है कि जो काशी में शरीर छोड़ता है, निश्चय ही उसकी मुक्ति हो जाती है।

यथा गयायां तृप्ताः स्युः पिण्डदाने पितामहाः ।
धर्मतीर्थे तथैव स्युर्न न्यूनं नैव चाधिकम् ॥३३॥
(का० खं० अ० ८१)

जिस प्रकार गयाजी में पिण्डदान करने से पितामह अर्थात् पितृगण तृप्त होते हैं उसी प्रकार धर्मतीर्थ में पिण्डदान करने से पितर तृप्ति को प्राप्त होते हैं। जो न इससे कम और न अधिक है।



उपासते महात्मानं जपन्ति शतरुद्रियम् ।
स्तुवन्ति सततं देवं त्र्यम्बकं कृत्तिवाससम् ।
ध्यायन्ति हृदये देवं स्थाणुं सर्वान्तरं शिवम् ॥२९॥

**(पद्म पुराण अ० ३८)**

**अर्थः-** काशी में निवास करने वाले वेद पारग ब्राह्मण महात्माओं की उपासना और सतरुद्रीय सूक्त का पाठ तथा कृत्तिवासेश्वर त्र्यम्बकेश्वर देव की स्तुति करते हैं। और सर्वान्तर्यामी शिव स्थाणु देव का हृदय से ध्यान करते हैं।

[illegible]

**(काशी खण्ड अ० ५०)**

**अर्थः-** वे गर्भवास में रहते हैं, जिन्होंने गर्भ रूपी वन क्षेत्र काशी पुरी वरुणा और असी के बीच का दर्शन और सेवन नहीं किया, उन्हीं को जन्म लेना पड़ता है।

✓ मातुराज्ञामथ प्राप्य जनन्या सह पक्षिराट् ।
क्षणाद्वाराणसीं प्राप मोक्षनिक्षेपभूमिकाम् ॥१३८॥

**(काशी खण्ड अ० ५०)**

**अर्थः-** माता जी की आज्ञा पाकर पक्षिराज गरुड़ माता जी के साथ मोक्ष निक्षेप भूमि काशी पुरी आये।

विश्वेशो जनको ह्युमा च जननी गङ्गा च मातृस्वसा ।
ढुण्ढी भैरव दण्डपाणि सदृशा ज्येष्ठा मम भ्रातरः ॥

(काशी में) **(काशी मुक्ति रहस्य)**

**अर्थः-** विश्वेश्वर जी पिता हैं एवं अन्नपूर्णा जी माता हैं। ढुण्ढी भैरव दण्डपाणि ज्येष्ठ भ्राता के समान हैं।

कदाचिदपि केषाञ्चित्काश्यां मोक्षान्तरायकः ॥ ५९/२ ॥
तव पादाम्बुजद्वन्द्वे निर्द्वन्द्वा भक्तिरस्तु नः ।
आकलेवरपातञ्च काशी वासोऽस्तु नो निशम् ॥ ६० ॥

**( काशी खण्ड अ० ६५ )**

**अर्थः-** जैगीसव्य ऋषि विश्वनाथ जी से बोले कभी भी किसी को काशी में मोक्ष प्राप्ति में बाधा नहीं होती है। अतः हे शिव! आपके दोनो चरण कमलों में मेरा अटूट दृढ़ भक्ति हो तथा जब तक यह शरीर न छूट जाये तब तक काशी में ही निरन्तर निवास हो।

देवेषु च यथा शम्भुस्तीर्थमुख्येषु काशिका ।
~~व्रतेष्वेकादशी~~
व्रतेष्वेकादशी मुख्या पुराणेषु तथा त्विदम् ॥ ८० ॥

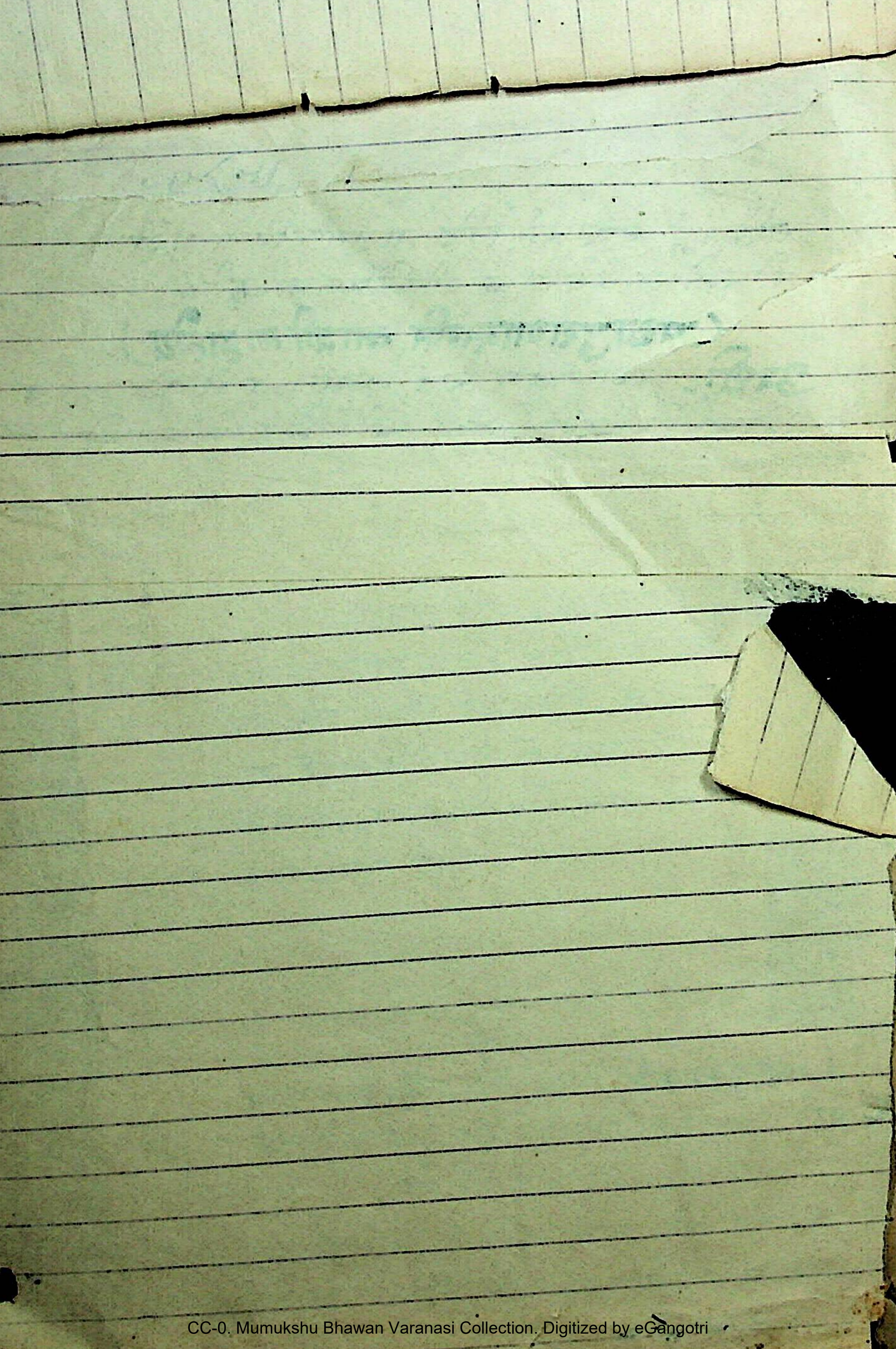
**( काशी रहस्य अ० २६ )**

**अर्थः-** जैसे देवों में शम्भू विश्वनाथ जी हैं, तीर्थों में काशी है, व्रतों में एकादशी है, और पुराणों में स्कन्द पुराण है।

तस्मात्प्रयत्नतः काश्यां ध्रुव! श्रेयः समाश्रयेत् ।
काशीश्रेयः फलं पुंसाम पायायोप जायते ॥ १२५ ॥

**( काशी खण्ड अ० २१ )**

**अर्थः-**



काश्यां येषां नाम गृह्णन्ति लोका बीजन्तेषां जायते मोक्षमार्गे।
काशीं ये वै संस्मरन्त्यन्यदेशे तानप्याशु शङ्करस्तारयेच्च ॥२२॥

(काशी रहस्य अ० ३)

अर्थः- काशी में जिनका लोग नाम लेते हैं, यह समझना चाहिये कि उन लोगों के मोक्ष का बीज जम गया है। जो अन्य देश में काशी स्मरण करते हैं उन्हें भी शंकर तार देते हैं।

✓ काश्यां ये वै शीघ्रमायुर्व्ययेन सिद्धिम्प्राप्तास्ते तु तीर्णा भवाब्धेः।
देशः कालो लोकजात्युक्तधर्मा स्तेष्वे दुष्टा नाशमायान्ति सर्वे ॥२३॥

(काशी रहस्य अ० ३)

अर्थः- जो काशी में शीघ्र आयु पूरा कर लेते हैं, वे भवाब्धि (भव सागर) को पार कर गये हैं। देश, काल, लोक, जाति के लिये कहे गये कर्म यदि अनिहित हों तो नष्ट होते हैं।

इसलिये समस्त सुर-समूह, महर्षि गणादि काशीनाथ जी की उपासना करते हैं—

सर्वसुरनिकायाश्च सर्व एव महर्षयः ।
योगिनः सर्वएवात्र काशीनाथमुपासते ॥
(काशीखण्डे, अ०-५६, श्लो०-१२०)

अर्थ — समस्त देवगण, समस्त महर्षि गण तथा समस्त योगीजन काशी में काशीनाथ जी की उपासना करते हैं। यहाँ तक कि—

विद्यानां सदनं काशी काशी लक्ष्म्याः परालयः ।
मुक्तिक्षेत्रमिदं काशी काशी सर्वात्रयीमयी ॥
(काशीखण्डे, अ०-५६ श्लो०-१२१)

अर्थ— समस्त विद्याओं एवं लक्ष्मी का स्थान, मुक्तिप्रद क्षेत्र यह काशी है। अधिक क्या कहा जाय यह काशी वेदत्रयीमयी है।

सर्वलिंगमयीकाशी सर्वतीर्थैक जन्मभूः ॥
(काशीखण्डे, अ०-५६, श्लो०-२६५)

अर्थ :→ काशी समस्त लिंगमयी है तथा सभी तीर्थों की जन्मभूमि है। काशी सभी तीर्थों की जननी है।

श्रुति स्मृति पुराणानां रहस्यं यस्त्व चीकरत् ।
सर्वपापप्रशमनं सर्वशान्तिकरम्परम ॥
(स्कन्दपुराणे, काशीखण्डे, अ०५५, श्लो०-४)

अर्थ — श्रुति-स्मृति तथा पुराणों में जो काशी का रहस्य बताया गया है, वह रहस्य काशी ही में है। यह सभी पापों का नाश करने वाली और परमशान्तिप्रद अर्थात् परम शान्ति प्रदान करने वाली है।

"धर्मार्थकाममोक्षाणां विनिश्चयकृतो ध्रुवम्"
(काशीखण्डे)

अर्थ — "इस काशी में धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों की निश्चित ही प्राप्ति होती है।

" तत्त्वज्ञानम्भवेत्पुंसांसम्यक्काशी निषेवणात् ।
काशीं निषेवणेनस्याद् विश्वेशकरुणोदयः ॥
(काशीखण्डे, अ०-५६, श्लो०६२)

अर्थ— काशी के सेवन से तत्त्वज्ञान होता है। काशी के ही सेवन से भगवान विश्वनाथजी को दया आती है, वे कृपाकर के मोक्ष प्रदान करते हैं।

" जरामरण संत्यक्तः सर्वरोग विवर्जितः।"
(काशीं में) (स्कन्दपुराणे, काशीखण्डे)

अर्थ - यहाँ मरने वाला जरा-मरण तथा समस्त रोग से रहित होता है।

= महापापानि पापानि ज्ञाताज्ञातानि भूरिशः।
उपपापानि पापानि मनोवाक्कायजान्यपि ॥
विलयं यान्त्य शेषाणि निःसन्देहं ममाऽऽज्ञया।
(स्कन्दपुराणे, काशीखण्डे, अ०९६, श्लो० - २५०, २५१)

अर्थ → ज्ञात अज्ञात कृत, पाप, महापाप, उपपाप तथा मन, वाणी एवं शरीर कृत, वे सभी पाप मेरी आज्ञा से नष्ट हो जाते हैं।

(शंकर जी)

= सुलभा साऽपि नो नूनं काश्यां मोक्षोऽस्ति हेलया॥
" अयाद् द्रुततरं काशीं महापातक घातुकाम्।

अर्थ - काशी में मोक्ष सुलभ है। काशी में मोक्ष की प्राप्ति खेल - खेल में होती है।

अर्थः बड़ी ही शीघ्रता से महापापों को दूर करने वाली काशी में प्रवेश करें।

तीर्थानि सर्वाणि पुरीश्च सर्वास्तथा शिवस्याऽऽयतनानि ब्रह्मिः।
नद्यो नदाः सरसः सागराश्च देवाः समेता मुनयश्च सर्वे॥
वसन्ति काश्यां स्वविमुक्तिकामाः कामारिसम्प्राप्त महत्प्रभावाः।
दृष्ट्वा हि काशी रमते मनो न तीर्थेषु चान्येषु सदैव तेषाम्॥

अर्थः- सभी तीर्थ, पुरी तथा जितने महादेव जी के प्रसिद्ध स्थान हैं नदी, नद, तालाब, सागर देव सहित सब मुनि अपनी-अपनी मुक्ति की कामना से कामारि श्री ~~शिव~~ जी के ~~प्रभाव~~ प्रताप से काशी वास कर रहे हैं। काशी के देखने मात्र से यदि काशी में मन रम जाता है, तो उसके लिये अन्य कोई तीर्थ सेवन करने योग्य नही है। ~~ऐसे~~ काशी ~~सेवन~~ वास करने वाले प्राणियों को स्वतः मुक्ति प्राप्त होती है।

समस्तदेवशरणं सर्वतीर्थाश्रयं शुभम्।
अविमुक्तं महाक्षेत्रं सेव्यन्धीरैर्जितेन्द्रियैः॥
काश्याम्पश्यन्ति सततं शङ्करं धर्मवत्सलम्॥

अर्थः- सभी देवताओं का शरण, सभी तीर्थों का शुभ आश्रय है से अविमुक्त महाक्षेत्र काशी का जितेन्द्रिय होकर बुद्धिपूर्वक सेवन करे। निरन्तर काशीवास करने वाले धर्मवत्सल श्री विश्वनाथ ~~शिव~~ जी का दर्शन करते हैं। अतः विश्वनाथ जी जीव को दर्शन देकर मुक्त कर देते हैं।

( पारायण )

भगवान विश्वनाथ स्वयं कहते हैं कि हे देवि ! ———

ब्रह्मादयस्तु जानन्ति येऽपि सिद्धा मुमुक्षवः।
अतः प्रियतमं क्षेत्रं तस्माच्चात्र रतिर्मम ॥

(मत्स्यपुराण, अ० १८०, श्लो० ५३)

भगवान विश्वनाथ जी स्वयं कहते हैं हे भगवति

अर्थ - सिद्ध मुमुक्षु तथा ब्रह्मादि देवता मेरे इस काशी क्षेत्र की महिमा को जानते हैं। इसी के कारण यह काशी हमें अति प्रिय है और हमारी इसमें रति है, प्रेम है।

देहं मङ्गं समासाद्य धीमन्तः सङ्गवर्जिताः ।
गता एव परं मोक्षं प्रसादान्मम सुव्रते ॥

( मत्स्यपुराण, अ० १८०, श्लो० - ६३ )

अर्थ → हे सुव्रते! देवि ! मेरी प्रसन्नता से अभक्त जनों के सङ्ग से रहित बुद्धिमान लोग इस क्षेत्र (काशीपुरी) में पार्थिव शरीर को त्याग कर परम पद (मोक्ष) को प्राप्त हुए हैं।

( पाद्यारवण्ड )

काश्यां हि काश्यते काशी काशी सर्वप्रकाशिका।
सा काशी विदिता येन तेन प्राप्ता हि काशिका॥
( . . . . . . )

अर्थ— काशी में काशी प्रकाशित होती है, काशी सब कुछ प्रकाशित करने वाली है, काशी सर्वफलप्रदा है, इस काशी को जिसने समझ लिया उसे काशी मिल गई। इसीलिये शिवजी भगवान् शंकर पार्वती जी से कहते हैं कि —

स्वर्गभूमिस्तु साज्ञेया मोक्षभूमिस्तु मध्यतः।
काश्याश्चैतर्दिशं देवि! योजनं स्वर्गभूमिका॥
मृतास्तत्र तु गच्छन्ति स्वर्गं सुकृतिनास्पदम्॥
(काशीरहस्ये)
अ० १

अर्थ→ ऊपर स्वर्ग-भूमि है, मध्य में मोक्ष-भूमि है, और काशी के चारों ओर हे देवि! एक योजन स्वर्ग-भूमि है, यहाँ मरने वाले पुण्यात्मा स्वर्ग पहुँचते हैं। ऋषियों ने यहाँ तक कहा है कि —

यत्सुखं काशीवासेऽत्र न तद्ब्रह्माण्डमण्डपे।
अस्ति चेद्द्विकथं सर्वे काशीवासाभिलाषुकाः॥
(काशीखण्डे)

अर्थ — जो काशी में सुख है, वह ब्रह्माण्ड में नहीं है। यदि होता तो सब लोग काशीवास के इच्छुक नहीं होते। इसी कारण से स्वर्गवासी भी सदैव पश्चाताप करते रहते हैं।

काशीस्थैः पतितैस्तुल्या न वयं स्वर्गिणः क्वचित्।
काश्यां पातभयं नास्ति स्वर्गे पातभयं महत्॥
(काशीखण्डे)

अर्थ → स्वर्गवासी कहते हैं कि हम सब काशी के पतितों के बराबर भी नहीं हैं, क्योंकि काशी में पतन का भय नहीं है, स्वर्ग में पतन का महान् भय है।

स्वर्गवासियों का यह कथन भी सम्यक् प्रकार सत्य है। क्योंकि जब —

वायुभक्षश्च सततं वाराणस्यां स्थितो नरः।
यदि पापो यदि शठो यदि वा धार्मिको नरः॥
वाराणसीं समासाद्य पुनाति स कुलत्रयम्॥

(स्कन्द पुराणे, काशीखण्डे)

केवल वायु खाकर काशी में स्थित व्यक्ति यदि पापी हो, शठ हो, अधार्मिक हो तो वाराणसी प्राप्त कर वह तीन कुल पवित्र कर देता है।

ऐसी काशी में वास अवश्य करना चाहिए। भूतभावन भगवान् शङ्कर की काशी में —

प्रेमपात्रं द्वयं देवि। नितरां नेतरन्मम ।
त्वं वा तपोध्वजे गौरि। काशीवानन्द भूमिका ॥
(कूर्मपुराण)

अर्थ — हे देवि! मेरे अत्यन्त प्रेम-पात्र दो हैं। हे तपोध्वजे गौरि! एक तुम ~~अथवा~~ और दूसरी आनन्द देने वाली काशी है।

अमरामरणं सर्वे वाञ्छन्तीह प्रसूतये ।
देवा मुनीन्द्रा राजानो वाञ्छन्त्यादौ भुवि ॥
( . . . )

सभी अमरगण यहीं काशी में उत्पन्न होना और मरना चाहते हैं।
अर्थ — देवता, मुनीन्द्र और राजा लोगों की भी यही स्पृहा रहती है कि कब हमें काशी पुरी प्राप्त होगी।

विना काशीं न मे स्थानं विना काशीं न मे रतिः।
विना काशीं न निर्वाणं, सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥
(कूर्मपुराणे)

अर्थ → काशी को छोड़कर मेरा दूसरा स्थान नहीं और काशी को छोड़कर मेरा कहीं अनुराग नहीं है। काशी के बिना कहीं मोक्ष नहीं है। यह मैं सत्य सत्य कहता हूँ। भगवान् शिव तो यहाँ तक कहते हैं कि हे! देवि-

यदि पुण्यं किंचिदपि काश्यां भव्यं तु यैर्जनैः॥
मुक्त्वा क्रमेण सद्भोगानन्ते शिवपदं व्रजेत्।
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि रहस्यं काशिधर्मजम्॥

अर्थ- हे देवि! यदि किसी ने काशी में थोड़ा भी पुण्य प्राप्त किया है तो क्रमशः अच्छे भोगों को प्राप्त कर अन्त में शिव-पद प्राप्त करता है। हे देवि। मैंने यह काशी का रहस्य कहा है।

88

सी काशी जो गोप्य है, भगवान् शिव के अतिरिक्त अज्ञेय है, इस काशी के प्रति भगवान सदाशिव का अनुराग क्यों न हो। जो काशी—

रमते च गणैः सार्धमविमुक्ते स्थितः प्रभुः।
दृष्ट्वैतान् भीतकृपणान् पापदुष्कृतकारिणः ॥
(मत्स्यपुराणे, अ०-१८४, श्लो०-१३)

अनुकम्पया तु देवस्य प्रयान्ति परमां गतिम्।
अर्थ → भक्तानुकम्पी भगवांस्तिर्यग्योनिगतानपि ॥

नयत्येव वरं स्थानं यत्र यान्ति च याज्ञिकाः।
भार्गवाङ्गिरसः सिद्धास्त्वृषयश्च महाव्रताः ॥
अविमुक्ताग्निना दग्धा अग्नौ तस्मिन्विवाहितम्।
सा गतिर्विहिता पुंसामविमुक्त निवासिनाम् ॥
तिर्यग्योनिगताः सत्त्वा येऽविमुक्ते कृतालयाः।
कालेन निधनं प्राप्तास्ते यान्ति परमांगतिम् ॥
(मत्स्यपुराणे, अ०१८४, श्लो०-१३, १४, १५, १६, १७)

अर्थ → इस काशी-अविमुक्त क्षेत्र में भगवान विश्वनाथ जी अपने गणों के साथ क्रीड़ा करते हैं। इनको देखकर भयभीत दुष्कर्मी भी भगवान विश्वनाथ की कृपा से परम गति को प्राप्त करता है।

भक्तों के ऊपर कृपा करने वाले विश्वनाथ जी तिर्यक योनि में गये हुये भोगों को भी जहाँ याज्ञिक गण जाते हैं, वहाँ ले जाते हैं।

शुक्राचार्य भार्गव अङ्गिरादि महाव्रती, सिद्ध महर्षि गण, अविमुक्त अग्नि में दग्ध हो, जिस प्रकार अग्नि में

करते हैं।

रमते च गणै: सार्धमविमुक्ते स्थित: प्रभु: ।
दृष्ट्वैतान् भीतकृपणान् पापदुष्कृतकारिण: ॥
(मत्स्यपुराणे, अ०-१८४, श्लो०-१२)

अनुकम्पया तु देवस्य प्रयान्ति परमां गतिम् ।
अर्थ ⟶ भक्तानुकम्पी भगवांस्तिर्यग्योनिगतानपि ॥

नयत्येव वरं स्थानं यत्र यान्ति च याज्ञिका: ।
भार्गवाङ्गिरस: सिद्धास्तृषयश्च महाव्रता: ॥
अविमुक्ताग्निना दग्धा अग्नौ तमोभिवाहितम् ।
सा गतिर्विहिता पुंसामविमुक्त निवासिनाम् ॥
तिर्यग्योनि गता: सत्वा येऽविमुक्ते कृतालया: ।
कालेन निधनं प्राप्तास्ते यान्ति परमांगतिम् ॥
(मत्स्यपुराणे, अ०१८४, श्लोके-१३, १४, १५, १६, १७)

अर्थ ⟶ इस काशी-अविमुक्त क्षेत्र में भगवान विश्वनाथ जी अपने गणों के साथ क्रीड़ा करते हैं। इनको देखकर भयभीत दुष्कर्मी भी भगवान विश्वनाथ की कृपा से परम गति को प्राप्त करता है।

भक्तों के ऊपर कृपा करने वाले विश्वनाथ जी तिर्यक योनि में गये हुये भोगों को भी, जहाँ याज्ञिक गण जाते हैं, वहाँ ले जाते हैं।

शुक्राचार्य भार्गव अङ्गिरादि महाव्रती, सिद्ध महर्षि गण, अविमुक्त अग्नि में दग्ध हो, जिस प्रकार अग्नि में

रूई जल जाती है, वैसे इसी प्रकार काशी - अविमुक्त में वास करने वाले व्यक्ति के सभी पाप भस्मसात् हो जाते हैं। उस व्यक्ति को गति की प्राप्ति होती है। वह सर्वदा हेतु जीवनमुक्त हो जाता है।

तिर्यक् योनि को प्राप्त हुआ पुरुष भी यदि इस काशी-अविमुक्त क्षेत्र में निवास करता है, और समयानुसार प्राण-त्याग करता है तो वह मोक्ष को प्राप्त करता है। वह परम गति को प्राप्त करता है।

श्री काशीमणि कर्णिका सुरनदी विश्वेश्वरा दुर्लभाः।
पुंसां पूर्वतपः प्रभाव निचयात् प्राप्स्यन्ति तान् नाऽन्यथा

(काशी मूल रहस्य) अ० १३ श्लोक १०२
-ब्रह्म काण्ड

अर्थः — श्री काशी में मणि कर्णिका गंगा और अन्यों के विश्वनाथ जी दुर्लभ है, पुरुषों के पूर्व तप के प्रभाव के कारण से उन्हें मिलते हैं, अन्यथा नहीं।

ध्यायतां चात्र नियमं योगिनां शान्त चेतसाम्।
जायते योग सिद्धिः सा षण्मासेन न संशयः ॥

(पद्मपुराण, अ० - ३३)

अर्थ — काशी में जो योग शान्त चित्त से नियत ध्यान करते हैं (उनको छः मास में निःसन्देह योग — सिद्धि की प्राप्ति होती है

(५४)

क्षेममूर्तिरियं काशी क्षेममूर्तिर्भवान्भव ।
क्षेत्रमूर्तिस्त्रिपथगा नान्यत्क्षेमत्रयं क्वचित् ॥ ३६ ॥
येषां मे हृ काशी भक्तिर्मम क्षेत्रेऽति पावने ॥ ४१/२

(काशीखण्ड अ० [illegible] ६४

अर्थ – स्कन्द जी अगस्ती से कहते हैं यह काशी क्षेम अर्थात् कल्याण की मूर्ति है तथा हे विश्वनाथ जी आप भी कल्याण की मूर्ति हैं, एवं यह गङ्गा भी (क्षेम) कल्याण की मूर्ति है। अन्यत्र काशी के अतिरिक्त ये तीनों साथ-साथ प्राप्त नहीं होते। मेरे इस पावन काशीपुरी में जिसकी भक्ति होती है वह परम सत्त्व शरीर वाला होता है।

ततो नैव चरेत्पापं कायेन मनसा गिरा ।
एतद्रहस्यं वेदानां पुराणानां द्विजोत्तमाः ॥
मृतानां वै पुनर्जन्म न भूयो भवसागरः ।
(शिवपुराण)

काशीवासी को पाप नहीं करना चाहिए – चाहे वह देह से हो – चाहे मन से – चाहे वाणी से यही वेदों का पुराणों का रहस्य है। यहाँ मरनेवालों का पुनः जन्म नहीं होता। और वे पुनः भवसागर में भी नहीं फसते।

विश्वनाथो ह्यहं नाथः काशिका मुक्तिकाशिका।
सुधातरङ्गा स्वर्गङ्गा त्रयोऽप्यत्र किन्न यच्छति।
पञ्चक्रोशपरिमिता तनुरेषा पुरी मम॥
(काशी खण्ड अ० ५५ श्लो० ४३)

अर्थ – मैं नाथ, विश्वनाथ हूँ काशी मुक्ति काशिका है। स्वर्गङ्गा अमृत का तरंग है। ये तीनों क्या नहीं दे सकती। पञ्चक्रोशी पर्यन्त काशी मेरी शरीर रूपी पुरी है। उसी काशी की परिक्रमा की जाती है।

काशी परिक्रमा

संसारभारखिन्नानां यातायातकृतां सदा।
एकैव मे पुरी काशी ध्रुवं विश्रामभूमिका॥
(काशी खण्ड अ० ५५ श्लो० ४५)

अर्थ – जो सदा संसार के यातायात से खिन्न है, उनके लिए हमारी एक ही पुरी काशी विश्राम भूमि है।

विश्राम

विना काशीं न रमते यतोऽन्यत्र त्रिलोचनः।
शम्भोः शक्तिरियं काशी काचित्सर्वैरगोचरा॥२८॥
(काशी खण्ड अ० ४५)

अर्थ – त्रिलोचन शंकर जी काशी से अन्यत्र नहीं रमते शंकर की कोई विचित्र शक्ति यह काशी है। जिसको लोग नहीं जानते।

काशी सेद्भग्रमाणानां पुरुषार्थचतुष्टयम् ।
पुरः किङ्कर वत्तिष्ठेन्ममानुग्रहतो द्विजाः ॥
(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो० ५१)

अर्थ — विश्वनाथ जी अगस्ती जी से बोले — हे द्विज-गण ! जो भक्त काशी प्राप्ति की आकाङ्क्षा करते हैं। उन्हें धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष — चारो पुरुषार्थ (किङ्कर) सेवक की तरह उनके सामने खड़े रहते हैं। क्यों कि काशीवासी लोग मुझसे अनुगृहीत होते हैं।

आनन्दकानने ह्यत्रज्वलद्दावानलोऽस्म्यहम् ।
कर्मबीजानिजन्तूनां ज्वालयेन प्ररोहये ॥
वस्तव्यं सततं काश्यांपष्टव्योऽहं प्रयत्नतः ।
(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो० ५२, ५३

अर्थ — भगवान् शिव कहते हैं कि इस आनन्द कानन में मैं धधकता हुआ दावानल (दावाग्नि) हूं। अतः जीवों के कर्मबीज को भस्मसात करता रहता हूं। उन्हें उगने देता ही नहीं हूं। अतः भक्तों को काशी में निरन्तर ही निवास करना चाहिए। तथा मेरी उपासना प्रयत्न पूर्वक करनी चाहिए।

धन्यामद्भक्तिलक्ष्माणोब्राह्मणाः काशिवासिनः ।
यूयंयच्चेतसोवृत्तेर्नदूरेऽहं नच काशिका ॥
दातव्योवरः कोऽत्रव्रियतां मे यथा रूचि ।
(काशी खण्ड अ० ६४ श्लो० ५५, ५६

अर्थ — काशीवासी मेरी भक्ति से (परिपूर्ण) संयुक्त ब्राह्मण धन्य हैं। आप जैसे भक्तों की चित्त वृत्ति से न मैं दूर हूं न ही काशी। अतः आप लोगों को वर देना चाहता हूं अपनी इच्छानुसार आप कौन सा वर चाहते हैं।

# काशी की महिमा (६४)

पापक्षय कराश्चापि चतुर्वर्ग फलप्रदा: ।
यासां दर्शनादृध्यानादृ वन्दनात् पूजनादपि ।।

अर्थ — काशी पाप को क्षय करती है, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्रदान करती है। काशी में दर्शन, ध्यान, वन्दन, पूजनादि करने वाला व्यक्ति मुक्त होता है।

" महाश्मशानेऽप्यानन्दवने वास: "
(तारकोपदेश:)

अर्थ → महाश्मशान (काशी) का निवास आनन्द वन का निवास है।

गङ्गातीरमनुत्तमं हि सकलं तत्रापि काश्युत्तमा।
तस्यां सा मणिकर्णिकोत्तमतमा यत्रेश्वरो मुक्तिदः।
देवानामपि दुर्लभं स्थलमिदं पापौघनाशक्षमं।
पूर्वोपार्जित पुण्य पुञ्ज गमकं पुण्यैर्जनैः प्राप्यते २
[आदि शंकराचार्य]

अर्थ आदि शंकराचार्य भगवान कहते हैं कि गंगा का तीर (किनारा) अति उत्तम है उससे भी काशी अति उत्तम है और काशी में भी मणिकर्णिका तीर्थ अति उत्तम है क्योंकि यहाँ तारक मन्त्र विश्वनाथ जी मुक्ति प्रदान करने वाले भगवान शिवजी विराजमान है और सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली वह मणिकर्णिका तीर्थ देवताओं को भी दुर्लभ है।

भूमिष्ठापि न यात्र भूः त्रिदिवतोऽप्युच्चैरधःस्थाऽपिया ।
या बद्धा भुवि मुक्तिदास्युरमृतं यस्यां मृता जन्तवः ॥

(काशी खण्ड अ० १ श्लो० ९)

अर्थ - यह काशी भूमि पर स्थित होकर भी भूमि नहीं है नीचे रहकर भी स्वर्ग से ऊँच है। जब तक यह मुक्तिदा काशी है तब तक यहाँ मरनेवाले जन्तु अमृतत्व को प्राप्त करते हैं।

या नित्यं त्रिजगत्पवित्रतटिनीतीरे सुरैः सेव्यते।
साकाशी त्रिपुरारिराजनगरी पायादपायाज्जगत् ॥

(काशी खण्ड अ० १ श्लो० २)

अर्थ - जो काशी त्रैलोक्य पावनी गंगा के तट पर स्थित होकर देवताओं से सेवित है। वह विश्वनाथ भगवान की राजधानी बिनाश से जगत की रक्षा करती है। ~~...~~

स्वेच्छयेति विसमात्रमचिन्तयत्ताम्।
संसारतारणतरीमसृजत्पुरीं सः ॥

अर्थ - स्वेच्छा से भगवान विश्वेश्वर ने (विश्वनाथ जी) संसार को पार करने के लिए नौका के रूप में इस काशीपुरी का निर्माण किया।



यथा प्रियतमा देवि मम त्वं सर्वसुन्दरी।
तथा प्रियतमं चैतद् मे सदाऽऽनन्दकाननम् ॥

सुन्दरी

अर्थ — हे सुन्दरी पार्वति! जिस प्रकार तुम मुझे प्यारी हो, उसी प्रकार यह आनन्द कानन काशी भी मुझे अति प्यारी है।

[illegible], त्रिनेत्रधारी भूतेश, काशीस्थ मुक्तिदाता भगवान शिव जी यहाँ तक कहते हैं कि — मैं योगियों के हृदय में अथवा कैलाश के मन्दिर में, निवास से मैं सन्तुष्ट नहीं होता क्योंकि हमारी आसक्ति तो सर्वदा काशी में रहती है —

न योगिनां हृदाकाशे न कैलाशे न मन्दिरे।
तथा वासरतिर्मेऽस्ति यथा काश्यां रतिर्मम॥
(कूर्मपुराण)

भावार्थ — मैं योगियों के हृदय में अथवा कैलाश के मन्दिर में निवास से मैं सन्तुष्ट नहीं होता। जितना अनुराग हमारा काशी में है। अतः काशी में रहकर प्राणियों को मुक्ति देता हूँ।

(६६)

एकेन जन्मना काश्यां निर्वाणं समवाप्यते ।
अतः परं कः सुगमः उपायः साधनैर्विना ॥

वैष्णवानां यथा शम्भुः पुराणानामिदंतथा ।
क्षेत्राणां चैव सर्वेषां यथा काशी ह्यनुत्तमा ॥

(श्रीमद्भागवत द्वादशस्कन्धे)

अर्थ - जैसे भगवान् विष्णु के भक्तों में भगवान् शङ्कर जी अग्रगण्य हैं। वैसे ही पुराणों में ~~स्कन्द~~ भागवत ~~पुराण का काशी खण्ड~~ अग्रगण्य है। और जितने भी मुक्तिप्रद क्षेत्र हैं उन सबों में सबसे उत्तम काशी क्षेत्र है।

पुरोहितेन सहितस्तोषयामास शङ्करम् ।
अविमुक्ते महाक्षेत्रे तोषितस्तेन शङ्करः ॥

(विष्णु पुराण)

अर्थ - जिस किसी ने पुरोहित को आगे करके भगवान् शङ्कर की आराधना की। महाकाशी क्षेत्र अविमुक्त में तपस्या ~~किया~~ की उस तपस्या से भगवान् शङ्कर परम प्रसन्न ~~हुए~~।

~~शंकर जी प्रसन्न~~ होकर ~~उन्होंने~~ वे उस व्यक्ति को मोक्ष प्रदान ~~किये~~ ~~नियान~~ कर देते हैं।

डूल काधुों का मन कुप्त रखा है।

एकेन जन्मना काश्यां निर्वाणं समवाप्यते ।
अतः परं कः सुगमः उपायः साधनैर्विना ॥

अर्थ → मनुष्य काशी में एक जन्म में ही निर्वाण (मोक्ष) प्राप्त कर लेता है। किसी भी साधन के बिना मोक्ष प्राप्ति के लिये काशी इससे बढ़कर सरल उपाय और दूसरा क्या हो सकता है ?

ब्रह्मणः परमं स्थानं ब्रह्मणाध्यासितं च यत् ।
ब्रह्मणा सेवितं नित्यं ब्रह्मणा चैव रक्षितम् ॥
ब्रह्मा तु तत्र भगवांस्त्र्यध्यं चेश्वरे स्थितः ।
पुण्यात् पुण्यतमं क्षेत्रं पुण्यकृद्भिर्निषेवितम् ॥
(मत्स्य पुराण)

अर्थः- ब्रह्म का परम स्थान ब्रह्म से अधिष्ठित है, ब्रह्म से सेवित तथा ब्रह्म से रक्षित यह स्थल काशी है। भगवान् ब्रह्मा तीनों काल ईश्वर भगवान शंकर के री में विराजमान हैं, अतः पवित्र से पवित्रतम यह काशी क्षेत्र पुण्यात्माओं से सेवित है।

संसारभयनिर्मुक्ताः सर्वपापविवर्जिताः ।
सुखेन मोक्षमायान्ति यथा सुकृतिनस्तथा ॥
ज्ञात्वा कलियुगं घोरमप्रकाश्यं कृतं मया ॥
(लिङ्ग पुराण)

अर्थः- शंकर जी कहते हैं कि संसार के भय से मुक्त सभी पापों से रहित पुण्यात्मा के पास सुख पूर्वक मोक्ष आता है। चूँकि घोर कलियुग को जानकर इस काशी को मैंने गुप्त रखा है।

...ह्यतमं क्षेत्रं मम वाराणसी पुरी ।
सर्वेषामेव भूतानां संसारार्णवतारिणी ॥
(पद्मपु० स्वर्गखण्ड अ० ३३ श्लो० ६)

अर्थ - युधिष्ठिर ने नारदजी से पूछा कि वाराणसी का विस्तृत महात्म्य कहें नारदजी ने ईश्वर देवी सम्वाद से इसी विषय पर जो कहा वह सुना -
हे पार्वती! मेरी वाराणसी पुरी अत्यन्त गुप्त क्षेत्र है। यह संसार के समस्त जीवों को संसार सागर से पार करती है।

(काशी)

उत्तमं सर्वतीर्थानां स्थानानामुत्तमं च यत् ।
ज्ञानानामुत्तमं ज्ञानमविमुक्तं परं मम ॥
(पद्मपु० स्वर्गखण्ड अ० ३३ श्लो० ११)

अर्थ - समस्त तीर्थों में और समस्त स्थानों में ज्ञानों में जो उत्तमोत्तम है वह मेरा अविमुक्त काशी क्षेत्र है।

स्थानान्तर पवित्राणि तीर्थान्यायतनानि च ।
श्मशानसंस्थितान्येव दिव्यभूमिगतानि च ॥
(पद्म पु० स्वर्ग खण्डे अ० ३३ श्लो० १२)

अर्थ - अन्य स्थानों, तीर्थों से मन्दिरों से पवित्र चाहे वह स्वर्ग में हो या भूमि में सबसे बढ़कर श्मशान क्षेत्र है।

(काशी)

(१००)

"अन्यसर्वं स च मोक्ष एक काश्यां न चान्यत्र तथा यथाव ॥"

अर्थ — मोक्ष एकमात्र काशी में है। दूसरे जगह नहीं है।

काश्यां श्री देवदेवस्य विश्वनाथस्य पूजनम् ।
सर्वपापहरं पुंसामनन्ताभ्युदयावहम् ॥
(शिवपुराणे)

अर्थ → श्री काशी जी में देवाधिदेव श्री विश्वनाथ की पूजा सभी पापों को दूर करती है, तथा अनन्त अभ्युदयों को देती है।

योजनानां शतस्थोपि विमुक्तं स्मरेद्यदि ।
बहुपातक पूर्णोपि पदं गच्छत्यनामयम् ॥३७॥
(नारदपुराण अ०७४)

अर्थ: — यदि एक सौ योजन पर स्थित रहकर भी श्री काशी जी का स्मरण करें, तो बहुल पाप कर्म से पूर्ण होने पर भी वह प्राणी पापों से रहित हो जाता है।

लक्ष्मीक्षेत्रं महापीठं साधकस्यैव सिद्धिदम् ।
साधकस्तत्र मन्त्राश्चनरः सिद्धिमवाप्नुयात् ॥६५॥
(का० खं० अ०७०)

साधकों का परम सिद्धिप्रद लक्ष्मीक्षेत्र नामक महापीठ है, जो मनुष्य वहाँ पर मन्त्रों का साधन करता है, वह अनायास ही सिद्धि को प्राप्त कर लेता है।

# काशी की महिमा (१०१)

कदा वाराणस्याममरतटनीरोधसि वसन् वसानः
कौपीनं शिरसि निदधानोऽञ्जलिपुटम् ।
अये गौरीनाथ त्रिपुरहर शंभो त्रिनयन प्रसीदेत्या
क्रोशन् निमिषमिव नेष्यामि दिवसान् ॥

(स्कं रामायण)

कब वह समय आयेगा जब मैं भगवान शङ्कर की नगरी में गंगा के किनारे वास करता हुआ कौपीन धारण करके शिर ऊपर हाथ जोड़कर कर हे गौरीनाथ हे त्रिपुरहर हे शम्भो हे त्रिनयन हे शिव हमारे ऊपर प्रसन्न हो इस प्रकार शंकर जी को नमस्कार करता हुआ तथा स्मरण करता हुआ काल व्यतीत करूंगा ।

किं पुनर्निर्ममा धीरास्सत्वस्था दंभवर्जिताः ।
कृतिनश्च निरारंभास्सर्वे ते मयि भाविताः ॥
जन्मान्तरसहस्त्रेषु जन्मयोगी समायुतात् ।
तदिहैव परं मोक्षं मरणादधिगच्छति ॥

(शिव पुराण)

जब पूर्वोक्त साधारण मनुष्यों की मुक्ति काशीवास मात्र से होती है, तब फिर जो ममता रहित तथा धैर्यवान सात्विक दंभ अहंकार से रहित एवं पुण्यकर्म करने वाले, अनिष्ट कर्मों से रहित पुरुषों की मुक्ति क्यों नहीं होगी । अर्थात् अवश्य ही होगी । अनन्तकोटि जन्मों से मुक्त न हुए प्राणी इस काशी क्षेत्र में मरने मात्र से परं मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं।

# काशी की महिमा



गङ्गातीर्थे च गमनं यात्रा वाराणसी प्रति।
दर्शनं तत्र लिङ्गानां स्थापितानां सुरेश्वरैः॥२४॥
मुक्तेश्च प्रापकं ह्येतच्चतुष्टयमुदाहृतम्।
शिवार्चनं रुद्रजप उपोष्यं च दिनत्रयम्।
वाराणस्यां च मरणं मुक्तिरेषा चतुर्विधा॥

(वायवीयसंहिता) उत्तरार्द्ध अ० ४०

गङ्गा तीर्थ पर जाना, वाराणसी (पंचक्रोशी) की यात्रा करना एवं इन्द्र द्वारा स्थापित भगवान् शिवलिङ्ग का दर्शन करना कल्याण को देने वाले हैं। काशी में मुक्ति को प्राप्त कराने वाले चार साधन कहे गये हैं जो इस प्रकार हैं - १- भगवान् शिव की पूजा, २- रुद्रजप अथवा रुद्राभिषेक, ३- काशी वास करते हुए तीन दिन का (कृष्ण पक्ष की अष्टमी तथा सोमवार एवं चतुर्दशी) यह विशेष व्रत (उपवास), ४- काशी में शरीर का परित्याग। अस्तु ~~यह सब के~~

अकुर्वन् कारुपं कर्म समलोष्टाश्मकांचनः।
पंचाक्षरपरो नित्यं निषेवेत् विभोः पुरीम्॥

[पद्मपुराण]

अर्थ - अकरणीय अशुभ कर्मों को न करता हुआ मिट्टी सुवर्ण सभी में सम दृष्टि रखता हुआ प्राणी ॐ नमः शिवाय इस पञ्चाक्षर मन्त्र का जप करता हुआ इस काशी पुरी तथा भगवान् शिव की पूजा और उपासना करें।

मुने विश्वभुजा गौरी विशालाक्षीपुरः स्थिता।
संहरन्तीमहाविघ्नं क्षेत्रभक्तिजुषांसदा ॥२२
(का० खं० अ० ७०)

हे ऋषिवर विशालाक्षी के सामने ही विश्वभुजा गौरी स्थित है,

2 प्राप्यतेऽत्रकुमारीभिर्गुणशीलाद्यलंकृतः।
गुर्विणीभिःसुतनयोबन्ध्याभिर्गर्भसम्भवः॥१५।
(का० खं० अ० ७०)

विशालाक्षी का पूजन करने से कुमारियों को गुण और शील इत्यादि से विभूषितारूप संपत्तिमान् पति मिलता है और गुर्विणियों को उत्तम पुत्र रत्न एवं वंध्याओं को भी गर्भ संभव होता है।

तँ स्तम्भं समलङ्कृत्य नरस्तत्पदमाप्नुयात्।
तत्रैव तीर्थं परमं कपालेशसमीपतः॥ ६५॥
कपालमोचनं नाम तत्रस्नातोऽश्वमेधभाक्॥ ६६ ॥
(का० खं० अ० ७७)

उस स्तम्भ के विभूषित करने से मनुष्य रूद्रपद का भागी होता है, वहीं पर कपालेश्वर के समीप ही में बहुत बड़ा कपाल मोचन नामक तीर्थ है, जिसमें स्नान करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है।

# काशी की महिमा (१०४)

मुने विश्वभुजा गौरी विशालाक्षीपुरः स्थिता।
संहरन्तीमहाविघ्नं क्षेत्रभक्तजुषांसदा ॥२२

(का० खं० अ० ७०)

हे ऋषिवर विशालाक्षी के सामने ही विश्व भुजा गौरी स्थित है, जो क्षेत्र के भक्त मात्र लोगों के बड़े-बड़े विघ्न को सर्वदा संहार करती रहती है।

प्रयागे माघमासे तु सम्यक स्नातस्य यत्फलम्।
तत्फलं स्याद्दिनैकेन काश्यां पञ्चनदे ध्रुवम् ॥११५॥

(का० खं० अ० ५९)

प्रयाग राज में माघ मास भर स्नान करने से जो फल प्राप्त होता है काशी के इस पञ्चनद तीर्थ में केवल एक ही दिन स्नान करने से निश्चित वह फल मिल जाता है।

तत्र यो भोजयेद्विप्रान्यतिनोऽथ तपस्विनः।
सिक्थे सिक्थे लभेत्सोऽथ वाजपेयफलं स्फुटम् ॥

॥१२०॥ (का० खं० अ० ८१)

यदि कोई वहाँ पर ब्राह्मण सन्यासी अथवा तपस्वियों को भोजन ~~कराव~~ अन्नदान करावे तो उसे अन्न के प्रत्येक कणिका में समस्त वाजपेय यज्ञ का फल मिल जाता है।

# काशी की महिमा (१०५)

नारायणः शतम्पञ्चशतञ्चजलशायिनः।
त्रिंशत्कमठरूपाणि मत्स्यरूपाणि विंशतिः॥
॥२०७॥ (काशी खण्ड) अ० ६१ →

मेरी पाँचसौ मूर्ति यां नारायण रूप की, एक सौ जलशायी रूप की, तीस कच्छप रूप की, बीस मत्स्य रूप की है।

गोपालाश्च शतं साष्टं बुद्धाः सन्ति सहस्त्रशः।
त्रिंशत्परशुरामाश्च रामा एकोत्तरं शतम्॥
विष्णुरूपोऽस्म्यहं चैको मुक्ति मण्डपमध्यतः
[काशी खण्ड अ० ६१] विष्णु भगवान ने कहा

अर्थ: एक सौ आठ गोपाल रूप की सहस्त्रशः काशी में एक हजार है बौद्ध रूप की तीस है परशुराम रूप के १०१ है और राम रूप के एक सौ एक है। और मुक्ति मण्डप के मध्य में मैं विष्णु के रूप में मैं अकेला ही रहता हूँ।

तथा पुष्कर न सा गतिः कुरुक्षेत्रे गङ्गाद्वारे च पुष्करे
या गतिर्विहिता पुंसा मविमुक्तनिवासिनाम्॥
(लिङ्ग पुराण)

लिङ्ग पुराण में कहा गया है कि जो गति इस अविमुक्त काशी में प्राप्त होती है। वह न तो कुरुक्षेत्र में होती है और हरिद्वार में तथा पुष्कर में भी नहीं होती।

प० प्रधानतया काश्यां मध्ये तिष्ठति शंकरः।
स्व पुरीजन सौख्याय मध्यमेश्वरः॥8।
[ उमासंहितायां ] अ० 77

भगवान् शंकर अपने भक्तों को सुख देने के लिए तथा उनकी रक्षा करने के लिए प्रधान रूप से काशी नगरी के मध्य में विराजमान रहते हैं। अतः उन्हें इसी लिए मध्यमेश्वर कहा जाता है।

सकृत् पीत्वा तु केदारे वाराणस्यां सकृत्।
गतः ब्रह्मविद्यां स कृज्ज श्रुत्वा सम्भवं न पुनर्लभेत्
33॥ केदार कल्प ] अ० 1

श्री केदारेश्वर भगवान के तीर्थ में एक बार गंगाजल पान करने से तथा श्री काशी जी में एक बार आने से, तथा ब्रह्म विद्या के एक बार पाने से फिर मनुष्य संसार में नहीं आता मुक्त हो जाता है।

यत्फलं तीर्थराजस्य स्नानेन परिकीर्त्यते।
सहस्रगुणितं तस्माद् धर्मनद्युस्नान मात्रतः॥२२।

अर्थ तीर्थों का राजा प्रयाग राज में स्नान करने से जो फल होता है उस फल से धर्म कूप में स्नान करने मात्र से सहस्र गुणा अधिक फल मिलता है।